वर्ष :: 33 अंक : 21
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 19 फरवरी, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

काली कमाई सफेद बना रहे सफेदपोश

गुर्गे चला रहे गोरखधंधा, आयकर और ईडी के पास पहुंचा मामला, बिल्डिंग, अस्पताल सहित कई कारोबार में लगा रहे कमाई

- देवेन्द्र शर्मा -

रांची : झारखंड प्रदेश के कुछ जन-प्रतिनिधियों की अवैध काली कमाई बाजारों में लगाये जाने की सनसनीखेज खबर मिली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार चार प्रमुख जन-प्रतिनिधियों ने अपने-अपने खास गुर्गों के माध्यम से भारी रकम प्रदेश के चार-पांच राजस्व वाले जिलों में लगायी है। सूत्रों के अनुसार नेताओं की धनराशि कुछ खास प्रमुख बिल्डर सहित प्रदेश के व्यवसायियों को दी गई है। धनराशि लेने वालों ने अपने व्यवसाय में इन्हें अघोषित पार्टनर बनाकर लाभ के हिस्से पर सहमति बनायी है। सूत्र बताते हैं कि इस सम्बन्ध में आयकर और ईडी को विवरण के साथ सूचना दी गई है। सम्बन्धित विभाग ने चिन्हित लोगों के सम्बन्ध में प्रारम्भिक सूचना एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया है। इसी प्रकार दो जन-प्रतिनिधि अपनी अवैध कमाई

का भारी हिस्सा एक भव्य विशाल अत्याधुनिक अस्पताल बनाने में लगा रहे हैं। कुछ लोगों ने पिछले दिनों दिल्ली और बेंगलुरू में भव्य फ्लैट का भी सौदा किया है।

सूत्रों का कहना है कि जन-प्रतिनिधि के खास-खास गुर्गे ही इनकी अवैध काली कमाई की लेन-देन का हिसाब-किताब रख रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि एक खास पार्टी के चार नेता, जो कुछ समय से सक्रिय राजनीति से किनारा लेकर पार्टी को छतरी बनाकर अपने व्यवसाय में व्यस्त थे, अपने नेता के इस कार्य को अंजाम दे रहे हैं। इस कार्य में सिर्फ सत्ताधारी दल के सदस्य शामिल नहीं हैं, विपक्ष के नेता का नाम भी सामने आ रहा है। खबर है कि धनबाद और जमशेदपुर में जो धनराशि का प्रयोग किया गया है, उसकी भी प्रगति को देखने नेता के गुर्गे गोपनीय रूप से आते-जाते देखे गये हैं। दो जन-प्रतिनिधियों ने रांची-रामगढ़ और हटिया-खूंटी रोड पर बड़ा आवासीय प्लॉट भी ले लिया है। सूत्र बताते हैं कि कुछ समय पहले एक जन-प्रतिनिधि ने अपने विभाग में एक दागी आरोपित अधिकारी को भारी रकम लेकर नियम विरुद्ध प्रोन्नति देकर प्रमुख पद पर स्थानांतरित कर दिया। इस कार्य से विभाग के लोग अचंभित थे। इस कार्य में करोड़ों की राशि पर समझौता हुआ। चूंकि, पद मालदार था, अतः पार्टी ने औने-पौने में समझौता कर पद हासिल कर ली।

ब्यूरोक्रेट्स भी पीछे नहीं, आधा दर्जन अफसर जांच के घेरे में

सूत्रों का कहना है कि सिर्फ राजनेता ही अवैध काली कमाई बाजार में नहीं लगा रहे, कुछ ब्यूरोक्रेट्स भी इसमें पीछे नहीं। उन्होंने भी यह खेल बहुत पहले से चला रखा है। गौरतलब है कि राजनेता या ब्यूरोक्रेट खुद देन-लेन नहीं करते, बल्कि उनके दलालरूपी गुर्गे इस काम को मूर्त रूप देते हैं। रांची में पिछले दिनों एक मॉल और दो शो-रूम में करोड़ से अधिक का इनवेस्टमेंट किया गया है। जो बिल्डर्स फाइनेंस कराते हैं, उनके प्रोजेक्ट में व्यवधान भी नहीं आता और आराम से प्रोजेक्ट पूरा हो जाता है। कुछ समय पहले एक जन-प्रतिनिधि ने कोडरमा के समीप एक लोहे की सरिया बनाने की योजना पर काम शुरू किया है। झारखंड के कुछ जन-प्रतिनिधि इसी प्रकार अपनी अवैध काली कमाई का उपयोग कर रहे हैं। विश्वस्त सूत्रों की मानें तो राज्य के लगभग आधा दर्जन से अधिक टॉपमोस्ट ब्यूरोक्रेट भी केन्द्रीय जांच एजेंसी के शिकंजे में है, जिन पर नियमविरुद्ध कार्य करने के साथ-साथ अनियमितता, भ्रष्टाचार की जांच चल रही है। राज्य की एक सचिव पूजा सिंघल पर ईडी ने कार्रवाई करते हुए जेल भेजा। फिलहाल लम्बी अवधि तक जेल की रोटी खाने के बाद उन्हें सर्वोच्च न्यायालय द्वारा विशेष शर्त पर दो माह की जमानत दी गई है। प्रदेश के अपर मुख्य सचिव अरुण कुमार सिंह पर भी नियमविरुद्ध कार्य के साथ अनियमितता, भ्रष्टाचार को लेकर सीबीआई ने कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए झारखण्ड सरकार को प्राथमिकी दायर करने के लिए अनुमति मांगी है। सरकार के पास सीबीआई का पत्र आ चुका है। कुछ और भी आला अफसर भी जांच एजेंसी के दायरे में बताये जा रहे हैं। अगर सही तरीके से जांच होती है, तो न जाने कितने पूजा सिंघल जैसे मामले सामने आएंगे।

आविष्कार अनूठी नवोन्मेषता के लिए डीपीएस बोकारो की अंजलि का इंस्पायर अवार्ड मानक योजना में फिर चयन

ये बैसाखी है खास... जीपीएस, ऑटोमैटिक कॉलिंग सहित कई हाइटेक सुविधाएं, जरूरत पड़ी तो कुर्सी में भी हो जाती है तब्दील

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : शारीरिक रूप से लाचार लोगों के चलने-फिरने में बैसाखी काफी सहायक होती है, लेकिन इस बैसाखी के सहारे वह लाचार व्यक्ति अधिक दूर तक नहीं चल-फिर सकता। ऐसे में इस आम बैसाखी को खास बनाते हुए अक्षम लोगों के लिए हौसले का सहारा बनाया है डीपीएस बोकारो की मेधावी छात्रा अंजलि शर्मा ने। दिल्ली पब्लिक स्कूल, बोकारो में नौवीं कक्षा की छात्रा अंजलि ने ऐसी बैसाखी तैयार की है, जो हाइटेक सुविधाओं से युक्त है और समय आने पर कुर्सी में भी तब्दील हो जाती है। चलते-चलते जब व्यक्ति थक जाए, तो उस बैसाखी के दोनों ओर लगी एडजस्टेबल सीट को आपस में जोड़कर उसे कुर्सी का रूप दिया जा सकता है। ह्यआल इन वन हैंड क्रचेजह्न नामक इस विशेष बैसाखी के लिए अंजलि को इस वर्ष भारत सरकार की महत्वाकांक्षी इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के लिए चयनित किया गया है। सरकार की ओर से उसे अपना प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए 10 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की गई है।

इस बैसाखी में खास बात यह है कि इसे लेकर चलने-फिरने वाले का लोकेशन भी उनके परिजनों को आसानी से मिल सकता है। वह कहां, किस रास्ते से होकर गुजर रहा है और कहां पहुंचा है, यह सब उसके परिजन घर बैठे देख सकते हैं। यही नहीं, आपात परिस्थिति में इससे परिजनों को सीधे कॉल भी चला जाएगा। अंजलि ने बताया कि इसमें वह सेंसर, एमसीयू (माइक्रो कंट्रोलर यूनिट), सिम कार्ड आदि इंस्टॉल कर ऑटोमैटिक कॉलिंग की भी सुविधा दे रही है। चलते-चलते अगर व्यक्ति गिर जाए, तो उस समय बैसाखी पर पड़ने वाले अप्रत्याशित झटके का पता लगाकर सेंसर की मदद से खुद-ब-खुद परिजनों को फोन चला जाएगा। इसके लिए उसने एमसीयू में कंप्यूटर कोडिंग से जरिए संबंधित फोन नंबर को फीड किया है। ऑटोमेटिक कॉलिंग सेंसर के अलावा वह इमरजेंसी पुश बटन से भी कॉलिंग की सुविधा पर काम कर रही है। बता दें कि अंजलि ने लड़कियों की सुरक्षा के लिए ऑटोमेटिक कॉलिंग वाच भी बनाई है, जिसके लिए विगत वर्ष भी उसका चयन इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के लिए किया गया था। वह तकनीक भी अंजलि इस बैसाखी में इस्तेमाल कर रही है।

दिव्यांगों के लिए वरदान है हाइटेक बैसाखी : प्राचार्य

अपने विद्यालय की छात्रा अंजलि शर्मा द्वारा हाइटेक बैसाखी बनाने के कार्य को डीपीएस बोकारो के प्राचार्य डॉ. ए. एस. गंगवार ने महत्वपूर्ण और सराहनीय बताया है। उन्होंने कहा कि उसका प्रोजेक्ट दिव्यांगजनों के लिए विशेष रूप से लाभप्रद है और वास्तव में एक वरदान से कम नहीं है। अपनी कुशल प्रतिभा की बदौलत अंजलि ने एक बार पुनः इंस्पायर अवार्ड मानक योजना के लिए चयनित होकर स्कूल और शहर का नाम गौरवान्वित किया है।

कंधे को मिलेगा गद्देदार सहारा, लंबाई के मुताबिक एडजस्टेबल भी

अंजलि ने अपनी खास बैसाखी में ऐसी व्यवस्था की है कि उसे व्यक्ति की लंबाई या या सुविधा के मुताबिक एडजस्ट भी किया जा सकता है। बैसाखी पर हाथ रखने और कंधे वाली जगह पर कुशन पैड लगाकर गद्देदार सहारा भी दिया गया है। अंधेरे में उस दिव्यांग अथवा अक्षम व्यक्ति को चलने में दिक्कत न हो, इसके लिए उसमें एलईडी टॉर्च लगाया गया है। **(शेष पेज- 7 पर)**

- संपादकीय -

पोषक अनाज वर्ष- एक नया जनांदोलन

वर्ष 2023 भारत के लिए गौरवशाली बनकर सामने आया है, जब जी-20 की अध्यक्षता कर रहे भारत की ही पहल पर संयुक्त राष्ट्र ने इस वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में घोषित किया है। दरअसल, भोजन में मोटे अनाज का उपयोग करना भारत की परंपरा रही है। लेकिन, 1960 के दशक में हरित क्रांति के माध्यम से खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा दिये जाने के कारण मोटे अनाज की तरफ हमारा ध्यान बिल्कुल ही कम हो गया। धीरे-धीरे इसकी तरफ से हमने इस तरह मुंह मोड़ लिया और यह न सिर्फ हमारी थाली से गायब हो गया, बल्कि खपत में कमी के कारण देश में इसका उत्पादन भी कम हो गया। हरित क्रांति के पहले सभी फसली अनाजों में मोटा अनाज का उत्पादन लगभग 40 प्रतिशत होता था, जो आने वाले वर्षों में गिरकर 20 प्रतिशत रह गया। पहले जितने क्षेत्र में उनका उत्पादन होता था, उसकी जगह वाणिज्यिक फसलों- दलहन, तिलहन और मक्के ने ले ली। यह वाणिज्यिक फसलें फायदेमंद तो हैं और उनके उत्पादन को सरकार की कई नीतियों से समर्थन भी मिलता है। लेकिन, इन सबके बीच खानपान की आदत बदलने के साथ ही कैलोरी से भरपूर महीन अनाज को थाली में प्राथमिकता दी जाने लगी। परन्तु कोरोना महामारी ने हम सभी को स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा के महत्व का अनुभव कराया है। साथ ही, सदी में एक बार आने वाली महामारी के बाद संघर्ष की स्थिति ने हमें यह दिखाया है कि खाद्य सुरक्षा अभी भी पृथ्वी के लिए गंभीर चिंता का विषय है। मोटा अनाज, जिसे हम पोषक अनाज भी कहते हैं, उनका मनुष्यों द्वारा सबसे पहले उगाई जाने वाली फसलों में गौरवशाली इतिहास रहा है। ये अनाज अतीत में एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत रहे हैं, लेकिन कालांतर में यह भोजन की थाली से लुप्त होने लगे। भारत ने वर्ष 2018 में पोषक अनाज वर्ष मनाया था, ताकि मोटे अनाज को एक ऐसे भोजन के रूप में बढ़ावा दिया जाए, जो पोषण को भारत और विश्व के सुदूरतम हिस्सों तक ले जाने में मदद करे। भारत द्वारा योग से लेकर पोषक खाद्य पदार्थों को बढावा दिये जाने को लेकर किये गये प्रयासों को दुनिया ने स्वीकार किया है। ऐसे में अब समय की मांग है कि ऐसे अनाजों को भविष्य के लिए भोजन का विकल्प बनाया जाए। खाद्य सुरक्षा और पोषण को महत्त्व देने वाले भारत की पहल पर ही संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष घोषित किया। इसकी शुरूआत हो चुकी है और दुनिया में पोषक अनाज से बने भोजन के प्रति तेजी से रुझान बढ़ रहा है। एशिया महादेश में उत्पादित बाजरे में से 80 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन केवल भारत करता है। बाजरा या मोटे अनाज प्राचीन काल से भारत के कृषि संस्कृति और सभ्यता के हिस्से रहे हैं। ज्वार, बाजरा, मडुआ (रागी) आदि सबसे पुराने भोज्य पदार्थ हैं, जिनके बारे में मानव जाति को सबसे पहले पता चला था। ये अनाज ऐसी फसलें हैं, जिनकी खेती भारत में की जाती थी। ऐसे कई प्रमाण भी मिले हैं, जिनसे पता चलता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता के दौरान मोटे अनाजों को खाया जाता था। मोटे अनाज के इसी महत्व को पहचान कर लोगों को पोषक भोजन पदार्थ उपलब्ध कराने और स्वदेशी तथा वैश्विक मांग का सृजन करने के क्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर ही भारत ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में घोषित कराने में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई। भारत के इस प्रस्ताव को 72 देशों ने समर्थन दिया और मार्च 2021 में ही संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष के रूप में घोषित कर दिया। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत ने दुनिया को हमेशा कुछ न कुछ नया संदेश दिया है। खासकर, कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा के महत्व का एहसास कराया है। ऐसे में खाद्य वस्तुओं में पोषकता का समावेश होना जरूरी है। भारतीय परंपरा, संस्कृति, चलन, स्वाभाविक उत्पाद और प्रकृति ने हमें जो कुछ भी दिया है, वह निश्चित रूप से किसी भी मनुष्य को स्वस्थ रखने में परिपूर्ण है। लेकिन, आधुनिकता के नाम पर हम अच्छी चीजों को धीरे-धीरे भूलते जाते हैं और प्रगति के नाम पर बहुत सारी दूसरी चीजों को अपने जीवन में अपनाते जाते हैं। प्रगति आवश्यक है, लेकिन प्रकृति के साथ अगर प्रगति का सामंजस्य नहीं रहे तो सब कुछ व्यर्थ है। दुनिया के 200 देशों में से लगभग 130 देश किसी न किसी रूप में पोषक अनाज का उत्पादन करते हैं। इनमें भारत 9 प्रकार का पोषक अनाज पैदा करता है। बाजरा, ज्वार, मडवा, सावां, कोदो आदि इनमें शामिल हैं। ये सभी बाजरा के रूप में ही जाने जाते हैं। ये ऐसे अनाज हैं, जिनमें उच्च पोषक तत्व मौजूद हैं, जो प्रतिकूल कृषि जलवायु परिस्थितियों का भी सामना कर सकते हैं। इन्हें पोषण समृद्ध और जलवायु समर्थ फसल भी कहा जा सकता है। परंतु इन्हें मोटा अनाज कहकर नकार दिया गया था। आज वह अवधारणा बदल रही है, क्योंकि यह अनाज मानव जाति के लिए प्राकृतिक उपहार हैं। भारतीय बाजरा में प्रोटीन विटामिन और खनिजों की भरपूर मात्रा होती है। इसलिए वर्ष 2023 को पोषक अनाज वर्ष के रूप में घोषित किया जाना भारत के लिए निश्चय ही गौरव का विषय है। यह एक नये जनांदोलन का शुभारंभ है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था...

19 फरवरी- शिवाजी महाराज की जयंती पर विशेष

महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज का नाम बड़े आदर और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। उनकी वीरता के किस्से आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं। मुगलों की ताकत को, जिसने तलवारों पर तोला था.... बोली हर हर महादेव की, बच्चा-बच्चा बोला था... वीर शिवाजी ने रखी थी, लाज हमारी शान की... इस मिट्टी से तिलक करो, ये धरती हे बलिदान की... कवि प्रदीप द्वारा लिखे और गाए गए इस गीत की ये पंक्तियां आज भी देशवासियों में वीरता का जज्बा और जोश भर देने के लिए काफी है। शाहजी भोंसले की पत्नी जीजाबाई (राजमाता जिजाऊ) की कोख से 19 फरवरी, 1630 को शिवनेरी दुर्ग में जन्मे शिवाजी महाराज वीरता की मिसाल थे, हैं और हमेशा बने रहेंगे।

शिवाजी मुगलों के राज्य में हिन्दू साम्राज्य स्थापित करने वाले एकमात्र राजा थे, जिन्होंने केवल मराठाओं को ही नहीं, बल्कि सभी भारतवासियो को भी नयी दिशा दिखाई। उनका बचपन राजा राम, गोपाल, संतों तथा रामायण, महाभारत की कहानियों और सत्संग में बीता। वह सभी कलाओ में माहिर थे, उन्होंने बचपन में राजनीति एवं युद्ध की शिक्षा ली थी। उनके पिता अप्रतिम शूरवीर थे। शिवाजी महाराज के चरित्र पर माता-पिता का बहुत प्रभाव पड़ा। बचपन से ही वे उस युग के वातावरण और घटनाओं को समझने लगे थे।

उनके पिता शाहजी भसले पहले अहमदनगर के निजाम थे और बाद में बीजापुर के दरबार में नौकरी करने लगे। शिवाजी के पालन पोषण का दायित्व पूरा उनकी माता जीजाबाई पर था। शिवाजी बचपन से ही बहुत साहसी थे। कहा जाता है उनकी माता बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थीं, जिनका प्रभाव भी शिवाजी पर पड़ा। माता जीजाबाई बचपन में शिवानी को वीरता की कहानियां सुनाया करतीं, जिसका प्रभाव शिवाजी पर पड़ा। शिवाजी के गुरु थे स्वामी रामदास जिन्होंने शिवाजी की निर्भीकता, अन्याय से जूझने की सामर्थ्य और संगठनात्मक योगदान का विकास किया। वह अपने गुरु का इतना सम्मान किया करता थे कि उन्होंने गुरु चरण पादुका रखकर शासन किया और उनके नाम पर ही सिक्के बनवाए थे।

18 साल की उम्र से ही उन्होंने मराठाओं को इकट्ठा करके उनकी शक्ति को एकजुट कर एक महान मराठा राज्य की स्थापना की। शिवाजी जैसे वीर भारत देश में बहुत कम हुए हैं। आज भी उनकी वीरता की कहानियां लोगो के उत्साह को बढ़ा देती हैं। उन्होंने मात्र 18 साल की उम्र में मराठा सेना बनाकर स्वत्रंत मराठा राज्य बनाना प्रारम्भ कर दिया। 1674 में उन्हें छत्रपति की उपाधि दी गयी। उनके शासनकाल में महिला-सम्मान और न्यायिक व्यवस्था भी अपने-आप में अतुलनीय थी। 1680 में शिवाजी महाराज का देहांत हो गया। वीर पुरोधा और एक सच्चे महाराज के रूप में वीर शिवाजी सदैव भारतवासियों के दिलो-दिमाग पर राज करेंगे और उनके किस्से इसी प्रकार प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे। आज स्वार्थयुक्त राजनीति के दौर में ऐसे वीर महापुरुषों से वास्तव में प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, तभी उनका संघर्ष, उनके त्याग और देश को मुगलों और अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलानेवाले वीर बलिदानियों के बलिदान की सार्थकता बनी रह सकेगी।

- प्रस्तुति : गंगेश

सारस्वत प्रेम- शाश्वतप्रेम

- संजय कुमार झा -

बसंत प्रेम की अभिव्यक्ति है। प्रेम पाथेय भी और ध्येय भी। यह सृजन और सौंदर्य दोनों की सुरभि है। प्रेम दैविक और अलौकिक है। यह सांस्कृतिक और आध्यात्मिक यात्रा की सामाजिक स्वीकृति है। यह दैहिक नहीं है। अंतस की अंतहीन सिलसिला की अवस्थाएं हैं। यह योग और आध्यात्मिक चेतना का ध्रुव केंद्र है। बसंत की मादक बेला में चहुंओर वैशिष्ट्य और वैविध्य रंग दृष्टिगत होता है। बसंत ठाठ की आहट है। आम के मंजर, गेहूं की बालियां, गुलाब के फूलों से लकदक सुहावना मधुवन मन को मुग्ध करता है। बहार के ये पल मधुर श्रृंगाररस में शहद घोल देता है। कोयल की कूक और परागकणों को चूसती तितलियां आनंद को बहुगुणित कर देता है। प्रकृति के माधुर्य का मोहक महोत्सव है बसंत।

बसंत मां शारदा के आह्वान और आह्लाद का स्वर्णिम काल है। मां सरस्वती वेद और वीणा की झंकार की देवी हैं। वेद ज्ञान के प्रकाश का नेतृत्व करते हैं तो वीणा के तार सुरीली मधुर ध्वनियुक्त संगीत की। स्फटिक माला प्रांजलता और शांति का प्रतीक है। कमल पर आसीन मां यह संदेश देती हैं कि ज्ञान की प्रांजलता और संगीत संग कला के प्रेमिल भावों को उत्कृष्टता, प्रेम से ही संभव है। ज्ञान, विवेक और बुद्धि से संयोजित प्रेम ही शाश्वत शिल्प उकेर सकता है।

साहित्य, कला और संगीत सारस्वत प्रेम के बिना असंभव है। जीवन की यात्रा सरस्वती के आशीर्वाद बिना अधूरी है। सरस्वती सरल, सहज और सुशील मृदुल समर्पण से सुवासित हस्ताक्षर के

प्रांगण में पुष्पित और पल्लवित होती है। सरस्वती से संस्कार की समृद्धि आती है। ज्ञान के गवाक्ष खुलते हैं। बेसुरा राग भैरवी गाने लगता है।

मां सरस्वती के अलौकिक प्रेम में गोते लगाइए और भवसागर पार कर जाइए। प्रेम की भारतीय परम्परा को जीवनमंत्र बनाकर स्वयं, समाज और राष्ट्र को गौरवान्वित करने का सौभाग्य दिवस है। अज्ञानतारूपी तिमिर के तारणहार के शरणागत हो जाएं और ज्ञान की गंगा की त्रिवेणी में डुबकी लगाकर वर्तमान और भविष्य को संवार लें।

जय मां शारदे! जय मां भारती!!

(लेखक वरिष्ठ शिक्षाविद हैं।)

चिदानंद रूपः शिवोहम, शिवोहम... शिवमय रही इस्पातनगरी, हर-हर महादेव और बोलबम के जयकारे से गूंजता रहा इलाका

दो साल बाद महाशिवरात्रि की धूम

संवाददाता

बोकारो : देवाधिदेव महादेव और आदिशक्ति जगदम्बा के परिणय का महोत्सव महाशिवरात्रि बोकारो, उपशहर चास सहित आसपास के क्षेत्रों में पूरे उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सभी शिवालयों में दिनभर खासी रौनक छायी रही। कोरोनाकाल के दो वर्षों बाद इस बार महाशिवरात्रि की रौनक चारों ओर दिखी। अहले सुबह से ही मंदिरों में श्रद्धालुओं का तांता लगना शुरू हो गया, जो देर शाम तक जारी रहा। विशेषकर, महिलायें बड़ी संख्या में पूजा की थाल लिये अपने घरों से मंदिर की ओर कूच करती देखी गयीं। लाखों श्रद्धालुओं ने पूरी आस्था के साथ बाबा भोलेनाथ के जलाभिषेक के बाद बेलपत्र, धतूर व अन्य पुष्प, नैवैद्य आदि अर्पित कर उनका पूजन किया तथा सुख-समृद्धि की कामना की।

नगर के सेक्टर-3 में थाना मोड़ स्थित शिवालय, जनवृत्त- 12 में शिवलिंग अनुकृति वाले शिव मंदिर, 12डी स्थित निखिल पारदेश्वर महादेव मंदिर, सेक्टर-2डी मिथिला काली मंदिर के शिवालय, वहीं समीप स्थित शिव मंदिर, श्रीराम मंदिर परिसर स्थित शिवालय, एलोरा हॉस्टल के शिव-दुर्गा मंदिर सहित इस्पातनगरी के सभी सेक्टरों के शिवालयों में शिवभक्तों की खासी चहल-पहल देखी गयी। जबकि उपशहर चास स्थित प्राचीन बूढ़ा बाबा मंदिर, शक्ति मंदिर, लोकनाथ मंदिर आदि में शिवभक्तों की भीड़ उमड़ी रही।

शिव मंदिरों पर मेले जैसा नजारा बना रहा। हर कोई देवाधिदेव महादेव के प्रति आस्था से नतमस्तक हो पहुंचा और उनकी पूजा-अर्चना की।

दूसरी ओर, महाशिवरात्रि पर चारों ओर का वातावरण शिवमय बना रहा। भगवान शंकर के भक्तिगीत तथा वैदिक मंत्रोच्चार चहुं ओर गुंजरित होते रहे। जगह-जगह अखंड हरि कीर्तन, शोभायात्रा तथा महादेव विवाह का आयोजन कर बारातियों की झांकी भी निकाली गयी। इस अवसर पर चिन्मय मिशन, बोकारो, सिद्धाश्रम साधक परिवार व अन्य संगठनों द्वारा रुद्राभिषेक के भव्य कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अद्भुत रहा पारदेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक व पूजन

सेक्टर-12डी स्थित निखिल पारदेश्वर महादेव मंदिर में पारदेश्वर महादेव का पूजन अपने-आप में सबसे विशेष रहा, जहां सेक्टर-12, बियाडा आफिसर्स कोलोनी एवं आसपास के इलाके से बड़ी संख्या में आये शिवभक्तों ने पारदेश्वर महादेव का अभिषेक किया। पारद शिवलिंग का दर्शन और पूजन सबसे उत्तम, दुर्लभ व चमत्कारिक माना जाता है। संयोगवश यह शिवलिंग बोकारो में स्थापित हैं। बोकारो के सेक्टर-12डी में सिद्धाश्रम साधक परिवार की ओर से निखिल शिष्यों द्वारा स्थापित निखिल पारदेश्वर महादेव मंदिर न केवल बोकारो व झारखंड, बल्कि पूरे पूर्वी भारत के लिये एक आध्यात्मिक धरोहर है, जहां 51 किलोग्राम वजन वाले दुर्लभ पारद शिवलिंग विराजमान हैं। सुबह से ही मंदिर में भक्तों का तांता लगना शुरू हो गया, जो देर शाम तक जारी रहा। पंडित गंगाधर पांडेय ने विधिपूर्वक पूजन व रुद्राभिषेक संपन्न कराया। जबकि, अनुष्ठान की सफलता में विजय कुमार झा, प्रो. अमरेंद्र कुमार सिंह, जेपी लाल, चंद्रप्रभावती देवी, डॉ. आरएन प्रसाद, रमेश पात्रा, भोला सिंह, विष्णुदेव दास, सुभाष कुमार, डीडी रवानी, धर्मेंद्र कुमार, उत्तम सिंह आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

शिव मंदिरों के बाहर मेले सा नजारा

महाशिवरात्रि पर मंदिरों के बाहर मेले जैसा नजारा भी बना रहा। फल-फूल, बेलपत्र की अस्थायी दुकानो और खिलौने बेचने वालों की मौजूदगी ने मेलानुमा वातावरण में और चार चांद लगा दिया। सेक्टर- 3 के थाना मोड़ स्थित शिवालय, 12 डी में शिवलिंग अनुकृति वाले मंदिर, चेचका धाम, चास के बूढ़ा बाबा मंदिर, श्री राम मंदिर के शिवालय आदि जगहों पर मेलानुमा दृश्य बना रहा। मंदिरों की साज-सज्जा भी देखते ही बन रही थी। कई दिन पूर्व से ही मन्दिरों की सजावट और रंग-रोगन का काम चल रहा था।

सूर्य मंदिर में महाशिवरात्रि पर भजन संध्या

महाशिवरात्रि के अवसर पर सेक्टर 4 एफ स्थित सूर्य मंदिर में भास्कर सेवक समिति की ओर से भजन संध्या का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय सुप्रसिद्ध गायक अरुण पाठक ने 'पूजा के हेतु शंकर आयल छी हम पुजारी... ', 'बिरज में होली खेलत नंदलाल... ', 'मिथिला में राम खेलथि होरी... ', गायिका सुनीता श्रीवास्तव ने 'बसहा चढ़ल बहुरहवा शंकर दुलहवा...', 'बाबा लेने चलिये हमरो अपन नगरी... ' सहित अन्य कलाकारों ने भजन-कीर्तन प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिरस से सराबोर कर दिया। मौके पर सीबी मिश्र, शंकर पांडेय, धनेश चन्द्र मिश्र, बिपिन बिहारी श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

पहल अपराध-नियंत्रण को लेकर बोकारो में एसपी चंदन झा ने की नई व अहम शुरुआत

क्यूआर कोड से सुधरेगी पुलिसिया कार्यप्रणाली

संवाददाता

बोकारो : बोकारो जिले में अपराध नियंत्रण तथा पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से एसपी चंदन कुमार झा ने अनूठी पहल शुरू की। अपराध-नियंत्रण, विधि-व्यवस्था एवं सड़क हादसे के के दृष्टिकोण से नई प्रणाली के तहत क्यूआर कोड आधारित ई-बीट सिस्टम की शुरुआत की गई है। नई प्रणाली के तहत बोकारा पुलिस चिन्हित 28 स्थानों पर क्यूआर कोड स्कैन कर अपनी उपस्थिति दर्ज करायेगी। एसपी के मुताबिक जल्द ही बोकारो जिले के थाना व ओपी प्रभारियों को क्यूआर कोड की स्कैनिंग के साथ-साथ अधिकारियों द्वारा कड़ी निगरानी कोड स्कैनिंग के साथ-साथ वरीय अधिकारियो द्वारा कड़ी निगरानी के साथ डेटा को बनाये रखना होगा, ताकि गश्त करने वाली टीमें अपनी ड्यूटी से बच न सकें।

पिछली व्यवस्था में पारम्परिक तौर पर बीट डायरी के माध्यम से अपनी गतिविधियों को मैनुअल रूप से रिकार्ड करना पड़ता था। पुरानी व्यवस्था में हेरफेर की गुंजाइश थी, क्योंकि निगरानी मैनुअल आधार पर थी। यानी इससे अब पुलिस के कामकाज की ढिलई की गुंजाइश नहीं रहेगी। नई व्यवस्था के तहत समय, दूरी तथा फोटा के माध्यम से सटीक निगरानी हो पायेगी। नई व्यवस्था से बीट पुलिस को अपने मोबाइल फोन से रूट पर लगे क्यूआर कोड को स्कैन करना होगा। ऐप आधारित क्यूआर कोड तथा कैमरे का उपयोग करता है। कंट्रोल रूप से रूप तथा वरीय अधिकारी से भी सिस्टम की रियल टाइम आधार पर मॉनिटरिंग की जा सकेगी।

जैसे ही बीट पुलिसकर्मी क्यूआर कोड स्कैन करेंगे, प्रभारी अधिकारी को न केवल इसकी पुष्टि मिलेगी, बल्कि ऐप में दर्ज दूरी का भविष्य की पुलिसिंग और योजना के लिए संग्रहित और विश्लेषण किया जा सकता है। एसपी ने बताया कि नई व्यवस्था के तहत 10 थाना क्षेत्रों में 28 स्थानों पर क्यूआर कोड लगाया गया है। ये क्यूआर कोड वर्तमान में मुख्य रूप से सड़क दुर्घटना के ब्लैक स्पॉट पर लगाए जा रहे हैं, ताकि उक्त स्थानों पर की जा रही पेट्रोलिंग दलों पर नियमित रूप से निगरानी रखी जा सके। निकट भविष्य में मुख्य व्यापारिक प्रतिष्ठानों, आभूषण भंडारों, बैंकों, स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों की पुलिस गश्त तेज करने के लिए जिला भर में ऐसा क्यूआर कोड की संख्या बढ़ाई जाएगी। बोकारो पुलिस से सहाता हेतु 112 नंबर पर संपर्क किया जा सकता है।

समाजसेवा की ओर मिथिला सांस्कृतिक परिषद के बढ़ते कदम

संवाददाता

बोकारो : बोकारो में मैथिलों की प्रतिष्ठित सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद की ओर से संस्था द्वारा संचालित मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल में एक रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर में परिषद के कई पदाधिकारियों व सदस्यों के अलावा विद्यालय के शिक्षकों ने भी पूरे उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर रक्तदान किया। बोकारो जेनरल अस्पताल (बीजीएच) के सहयोग से आयोजित इस शिविर का उद्घाटन परिषद के अध्यक्ष अनिल कुमार एवं बीजीएच के अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. श्रवण कुमार ने किया। इस अवसर पर स्कूल के चेयरमैन हरिमोहन झा, परिषद के उपाध्यक्ष राजेंद्र कुमार, महासचिव अविनाश कुमार झा, स्कूल के उपाध्यक्ष जयप्रकाश चौधरी, सचिव प्रमोद कुमार झा चन्दन, प्रदीप कुमार, सुनील चौधरी, प्राचार्य अशोक कुमार पाठक आदि उपस्थित रहे।

अपने संबोधन में अध्यक्ष अनिल कुमार ने कहा कि हमारे द्वारा किया गया रक्तदान कितनों की जिंदगियां को बचाता है। इस बात का एहसास हमें तब होता है जब हमारा कोई अपना खून के लिए जिंदगी और मौत के बीच जूझता रहता है। महासचिव अविनाश कुमार झा ने कहा कि रक्तदान को महादान की श्रेणी में माना गया है। उन्होंने परिषद एवं विद्यालय परिवार के सदस्यों की इसमें सक्रिय भागीदारी को सराहा। इस अवसर पर डॉ. श्रवण ने कहा कि रक्तदान करने से लीवर से जुड़ी समस्या में राहत मिलती है। रक्तदान से आयरन की मात्रा बैलेंस रहती है और कैंसर का खतरा कम हो जाता है। विद्यालय के सचिव प्रमोद कुमार झा ने भी नियमित रक्तदान के फायदे बताए।

हाहाकार के वो पांच दिन

संवाददाता
बोकारो/रांची : कृषि उपज बाजार अधिनियम के खिलाफ जिस आंदोलन का अंदेशा था, वही हुआ। सरकार की हठधर्मिता जारी रही और व्यवसायियों का आक्रोश भी थमा नहीं। लिहाजा, 15 से 19 फरवरी तक लगातार पांच दिनों तक बोकारो, चास सहित पूरे राज्य में राशन की किल्लत हो गई। थोक के साथ-साथ खुदरा दुकानों में भी ताले लटके रहे और शहरवासियों में लगातार पांच दिन तक हाहाकार की स्थिति बनी रही। चावल, दाल, आटा, चीनी सहित रोजमर्रा के घर के सामानों की किल्लत घर-घर में हो गई। दुकान खुले होने की आस में लोग दुकानों तक आए और निराश होकर लौट गए। चास के मेन रोड स्थित सदर बाजार, दुंदीबाद हाट, रामडीह मोड़ हाट सहित तमाम व्यावसायिक इलाकों में लगातार पांच दिनों तक वीरानी छाई रही। रसद के साथ-साथ फल-सब्जियों की भी यही स्थिति होती चली जा रही थी।

शनिवार को आक्रोशित व्यवसायियों ने मशाल जुलूस निकालकर अपने विरोध और आक्रोश का इजहार किया। अंततः सरकार की सुध जगी और स्थित खराब होती देख कृषि मंत्री बादल पत्रलेख और मुख्यमंत्री के सचिव विनय कुमार चौबे से व्यवसायियों की वार्ता हुई, जिसमें सकारात्मक कार्रवाई का मौखिक आश्वासन दिया गया और उनके आग्रह पर आंदोलन को फिलहाल स्थगित कर दिया गया। इधर, लगातार बाजार बंद रहने और उठाव नहीं होने के कारण महंगाई भी बढ़ गई। आलू, प्याज, फल की कीमतों में 5 से 10 रुपए तक की बढ़ोतरी हुई।

अपने आश्वासन पर कायम रहे सरकार : कमलेश

शहर के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं चेंबर के जिला कार्यसमिति सदस्य कमलेश जायसवाल ने कहा कि कृषि उपज विधेयक से न तो जनता, न व्यवसायी और न ही सरकार का भला होने वाला है। यह व्यापारियों के लिए अतिरिक्त बोझ है, जनता को महंगाई का सामना करना पड़ेगा। इससे भ्रष्टाचार बढ़ेगा और इंस्पेक्टर-राज कायम होगा। सरकार इसे पूरी तरह से वापस ले, तभी व्यवसायी संतुष्ट होंगे। वैसे सरकार ने जो आश्वासन दिया है, उम्मीद है वह इस पर कायम रहे।

बिल किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं : बैद

चेंबर के संरक्षक संजय बैद ने कहा कि इस जनविरोधी विधेयक को राज्यहित में सरकार को वापस लेना ही होगा। यह खाद्यान्न व्यवसायियों के साथ धोखा है। झारखंड में कृषि शुल्क किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जायेगा।

बाल अधिकारों की रक्षा के प्रति संवेदनशीलता जरूरी : डॉ. प्रभाकर

बोकारो : बाल अधिकार कार्यकर्ता सह मनोवैज्ञानिक डॉ. प्रभाकर कुमार की अगुवाई में महुआर स्थित महात्मा गांधी उच्च विद्यालय में बाल अधिकार संरक्षण को लेकर एक जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें बच्चों को जेजे एक्ट, पोक्सो 2012, पोक्सो रूल 2020, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, कॉर्पोरल पनिशमेंट के दायरे, बच्चों के अधिकार व कानून, बच्चों के सहायतार्थ 1098 नंबर, बच्चों के हितधारकों की सूची, हितधारक मे पुलिस की भूमिका, बाल उत्पीड़न की घटनाएं व उनके प्रकार, बाल विवाह, बाल श्रम, बाल दुव्यार्पार आदि की विस्तार से जानकारी दी गई। बच्चों को उनके शिक्षकों तथा स्कूल प्रबंधन के पदाधिकारियों की उपस्थिति में उक्त विषयों के अलावा समस्याओं के मनोवैज्ञानिक समाधान पर डॉ. प्रभाकर ने प्रकाश डाला। उन्होंने सामाजिक बदलाव पर जोर देते हुए कहा कि भी स्कूलों में पोक्सो की अद्यतन जानकारी हेतु जागरूकता को अनिवार्य किया गया है, ताकि बच्चों की सुरक्षा शत-प्रतिशत सुनिश्चित हो सके। अच्छे व बुरे स्पर्श की पहचान हेतु बच्चों को संवेदनशील बनाना महत्वपूर्ण है। मौके पर प्रधानाध्यापक केएल वर्मा, शिक्षक जानकी राम महतो, नवल किशोर महतो, जेपी राम, भुवनेश्वर महतो, सुमित्रा कुमारी, तनुजा कुमारी, केशव महतो, गौरव कुमार, रवीना कुमारी आदि शामिल रहे।

निर्देश सभी कंपनियां और एजेंसियां नियोजनालय से कराएं निबंधन : डीसी

बोकारो में 800 कंपनियां रोजगारदाता

संवाददाता
बोकारो : सेक्टर- 6 स्थित बोकारो स्टील सिटी कॉलेज सभागार में श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग तथा जिला प्रशासन एवं अवर प्रादेशिक नियोजनालय के तत्वावधान में राज्य के निजी क्षेत्र में स्थानीय उम्मीदवारों के नियोजन अधिनियम 2021 एवं नियोजन नियमावली 2022 पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस मौके पर डीसी कुलदीप चौधरी ने कहा कि बोकारो जिला औद्योगिक जिला है। लगभग 800 कंपनियों व एजेंसियों को नियोजन विभाग द्वारा चिन्हित किया गया है, जो नियोक्ता के रूप में कार्य करती है। उक्त नियमावली पूरे राज्य में 12 सितंबर 2022 से लागू है। ऐसे में जिले से संबंधित सभी कंपनियों व एजेंसियों को जिला नियोजन कार्यालय में निबंधन करवाना था। अब तक लगभग 146 कंपनियों ने निबंधन करवाया है। शेष कंपनी, एजेंसी अगले 15 दिनों में शतप्रतिशत निबंधन करना सुनिश्चित करें। इसमें किसी तरह की कोई चूक नहीं होनी चाहिए। डीसी ने कहा कि निबंधन के बाद कंपनियों के कर्मियों का डाटाबेस तैयार किया जाएगा। इस कार्य को चरणबद्ध किया जाएगा। झारखंड राज्य निजी क्षेत्र में स्थानीय उम्मीदवारों के नियोजन उम्मीदवारों के नियोजन अधिनियम, 2021 एवं नियोजन नियमावली 2022 के तहत 10 या 10 से अधिक व्यक्तियों को नियोजित करने वाले सभी नियोक्ताओं व प्रतिष्ठानों को 40 हजार रुपए तक के सकल मासिक वेतन या मजदूरी वाले सभी पदों पर 75 फीसदी स्थानीय लोगों को रखा जाना है। इसे हर हाल में सुनिश्चित करना है। ऐसे नहीं करने वाले नियोक्ताओं व प्रतिष्ठानों पर 05 लाख रुपए तक जुर्माना का प्रावधान है। उन्होंने सार्वजनिक कंपनियों को यह सुनिश्चित करने को कहा कि उनके यहां कार्यरत आउटसोर्सिंग कंपनियां व एजेंसियां शत-प्रतिशत निबंधन कराएं।

डीसी ने अंचल एवं अनुमंडल स्तर पर निबंधन कार्य की मानिटरिंग संबंधित क्षेत्र के अंचलाधिकारी व अनुमंडल पदाधिकारी को नियमित करने को कहा। डीडीसी कीर्तीश्री जी. व एसडीओ दिलीप प्रताप सिंह शेखावत ने रोजगार की दिशा में इस अधिनियम को अहम बताया। मौके पर कई बीडीओ, सीओ व अन्य लोग मौजूद रहे।

हफ्ते की हलचल

101 दीये जलाकर शहीदों को किया नमन

बोकारो : पूर्व सैनिक सेवा परिषद की बोकारो इकाई की ओर से सामाजिक संस्था संकल्प सृजन एवं नगरवासियों के सहयोग से पुलवामा के शहीदों की याद में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। चास में गरगा पुल पर स्थित भारत माता की मूर्ति-स्थल पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी याद में 101 दीये रौशन किए गए। सभी लोगों ने मिलकर शहीदों के सम्मान में नारा बुलंद किया। इस दौरान पूरा इलाका भारत माता की जय, वंदे मातरम एवं भारतीय सेना अमर रहे के नारों से गूंजता रहा। मौके पर परिषद के प्रान्तीय उपाध्यक्ष दिनेश्वर सिंह, जिला अध्यक्ष शत्रुघ्न सिंह, जिला सचिव संजीव, प्रांतीय सचिव राकेश मिश्र, राजहंस, मनोज कुमार, संजीव कुमार, सरयू शर्मा, राजीव, परमहंस, दीपक कुमार, रमेश बाबू, अमित कुमार, संजय शर्मा, बीएन पांडेय, मुकेश कुमार, अविनाश कुमार, अशोक कुमार वर्मा, राजीव कंठ, नीरज कुमार, सोमनाथ, राहुल मोदी, ब्रजेश पांडेय, भरत कुमार चक्रम, संकल्प सृजन की साध्वी झा, बलराम झा सहित विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सेवा भारती, भाजपा एवं अन्य संगठनों से भी लोग मौजूद रहे।

उज्जवल भविष्य के लिए हिन्दी में ही करें कार्य : पांडेय

चंद्रपुरा : दामोदर घाटी निगम, चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र व राजभाषा कार्यान्वयन उप समिति द्वारा इकाई 7 - 8 के सम्मेलन कक्ष में एकदिवसीय राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गई। इसका उद्घाटन मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय, मुख्य अभियंता परिचालन देवव्रत दास, पवन कुमार मिश्रा आदि अधिकारियों ने किया। श्री पांडेय ने कहा कि दामोदर घाटी निगम अपने कार्य क्षेत्र में काफी प्रगति कर रहा है। भारत सरकार के कई संस्थानों द्वारा डीवीसी को इसकी कार्यकुशलता के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है। हिंदी में कार्यालय के कार्यों का निपटारा कर हम और अधिक उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। हिंदी का प्रयोग से ही हमारा भविष्य उज्जवल होगा, इसलिए हम सभी को हिंदी में ही कार्य करना चाहिए। प्रशिक्षक भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के राजभाषा प्रबंधक दिलीप कुमार सिंह ने हिंदी की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डाला और सभी प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा नीति और तिमाही रिपोर्ट के संबंध में विशेष जानकारी दी। संचालन सहायक प्रबंधक अनिल कुमार सिंह ने किया।

बिजली विभाग की लापरवाही के खिलाफ फूटा जनाक्रोश

गोमिया : बिजली वितरण निगम लिमिटेड के अधिकारियों का काम के प्रति लापरवाही, कार्यों में कथित अनियमितता एवं गत 27 जुलाई 2022 के ऊर्जा विभाग के संकल्प का पालन नहीं होने के कारण गोमिया प्रखंड के बिजली उपभोक्ताओं का धैर्य टूट गया। भाकपा-राजद जनअभियान के बैनर तले तथा झारखंड आंदोलनकारी इफ्तेखार महमूद के नेतृत्व में बड़ी संख्या में गोमिया सब-स्टेशन के समक्ष लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। इसके बाद राजद नेता अरुण यादव की अध्यक्षता में आमसभा आयोजित की गई, जिसे आफताब आलम, पंचानन महतो, नरेश यादव, बबलू यादव, मौजीलाल महतो, देवानंद प्रजापति, समीर कुमार हालदार, राजेश करमाली, शाहजहां खातून, शकीला बानो आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने बिजली व्यवस्था में सुधार न होने पर गोमिया के तमाम औद्योगिक कार्य बाधित करने की चेतावनी दी।

भाटिया एथलीट एकेडमी की फ्लोरेंस को रेलवे में नियुक्ति

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल स्थित भाटिया एथलीट एकेडमी की अंतर्राष्ट्रीय 400 मीटर की गोल्ड पदक विजेता एथलीट फ्लोरेंस बारला को रेलवे में खेल कोटा से नियुक्ति मिली है.फ्लोरेंस का दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर में बतौर टीटीई में नियुक्ति मिली है। रेलवे में चयन पर फ्लोरेंस को बोकारो डीसी कुलदीप चौधरी, एकेडमी के एथलीट कोच आशु भाटिया, बोकारो जिला भाजपाध्यक्ष भरत यादव, जिप सदस्य शहजादी बानो, बोकारो थर्मल थाना के इंस्पेक्टर शैलेश कुमार चौहान आदि ने बधाई दी। कहा कि फ्लोरेंस ने बोकारो जिला का नाम रोशन किया है।

फिर आफत... दो साल बाद फिर दस्तक, कोलकाता लैब ने की पुष्टि; पशुपालन विभाग और जिला प्रशासन अलर्ट

फिर जागा बर्ड फ्लू का जिन्न, हर दिन 100 मुर्गियों की मौत

संवाददाता

बोकारो/धनबाद : बोकारो में बर्ड फ्लू का जिन्न एक बार फिर जाग चुका है। होली से पहले एक बार फिर पक्षियों की जानलेवा बीमारी बर्ड फ्लू ने अपनी दस्तक दे दी है। महज पांच दिनों के भीतर लगभग 500 मुर्गियों की मौत हो गई। यानी औसतन रोजाना लगभग 100 मुर्गियों की मौत हो रही है। यह सिलसिला लगातार जारी है। इससे विभाग में हड़कंप मच गया है। पशुपालन विभाग बर्ड फ्लू की आशंका को लेकर अलर्ट हो चुका है। नगर के सेक्टर- 12 में लोहांचल स्थित राजकीय कुक्कुट क्षेत्र में मुर्गियों की मौत का मामला सामने आया है।

स्टोर कीपर चंद्रभूषण प्रसाद के अनुसार प्रक्षेत्र के कमरा संख्या- 2 में 298 में कड़कनाथ और रूम नंबर- 3 में 186 रोड आइलैंड मुर्गियों की मौत हो चुकी है। सामान्य मुर्गियों के साथ-साथ कड़कनाथ मुर्गियां भी बर्ड फ्लू की चपेट में है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोलकाता के लैब में बर्ड फ्लू की पुष्टि की जा चुकी है। रांची से आई पशुपालन विभाग की टीम ने मरी हुई मुर्गियों के सैंपल कोलकाता स्थित जांच केंद्र में भेजे थे, जहां बर्ड फ्लू की पुष्टि हो गई। खबर लिखे जाने तक कोलकाता लैब में बर्ड फ्लू की पुष्टि के बाद भोपाल से अब अंतिम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। कुछ जांच रिपोर्ट भोपाल स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाई सिक्योरिटी एनिमल डिजीज में कोलकाता की एजेंसी द्वारा भेजी गई है। वहां से फाइनल रिपोर्ट का इंतजार पशुपालन विभाग कर रहा है।

इधर, निकटवती जिला धनबाद में भी मुर्गियों की मौत के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। इसे लेकर प्रशासन अलर्ट है और लोगों से सतर्कता की अपील की गई है।

सरकारी मुर्गी फार्म से बिक्री बंद, खाने से परहेज की अपील

बोकारो में बर्ड फ्लू की आशंका को देखते हुए फिलहाल एहतियात के तौर पर 14 फरवरी से ही सरकारी मुर्गी फार्म से अंडा की बिक्री बंद कर दी गई है। कुक्कुट प्रक्षेत्र के आसपास ब्लीचिंग पाउडर, चूना एवं कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव कर दिया गया है। जिला पशुपालन पदाधिकारी मनोज कुमार ने लोगों से कुछ दिनों तक मुर्गा-अंडा खाने से परहेज करने की अपील की है। इस घटना को देखते हुए रिस्पांस टीम का गठन किया गया है। भोपाल से जांच रिपोर्ट आने के बाद सरकार को इससे अवगत कराया जाएगा। इसके बाद विभागीय स्तर पर एक एडवाइजरी जारी की जाएगी।

सभी मुर्गियों को मारने का निर्देश

बर्ड फ्लू के मद्देनजर पशुपालन निदेशालय की ओर से सरकारी पोल्ट्री में सभी मुर्गियों को मारने का निर्देश दिया है। बताया जा रहा है कि भोपाल के लैब से मुर्गियों में बर्ड फ्लू की पुष्टि की गयी, तो राज्य के मुख्य सचिव और विभागीय सचिव को रिपोर्ट भेजी जायेगी। पशु स्वास्थ्य उत्पादन संस्थान द्वारा भी नियमित रूप से सैंपलों की जांच की जा रही है। इसको लेकर राज्य भर में 7500 सैंपलों की जांची जायेगी। इधर, बर्ड फ्लू की पुष्टि होने पर सभी मुगियों को मारने के आदेश दिए गए है।

लहेरियासराय से सहरसा की राह अब होगी आसान

दरभंगा : लहेरियासराय से सहरसा की राह अब आसान होने की संभावना बलवती दिख रही है। रेलवे इस दिशा में काम शुरू कर चुका है। दरभंगा से कोसी व मिथिला को जोड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी में प्रस्तावित लहेरियासराय-सहरसा नई रेललाइन की डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) इसी साल तैयार हो जाएगी। रेल निर्माण विभाग की ओर से 100 किमी दूरी वाली इस नई लाइन के लोकेशन का अंतिम चयन करने के लिए परामर्शदातृ एजेंसी बहाल करने को लेकर टेंडर निकाला गया है। रेल मंत्रालय से राशि आवंटित होने के बाद निर्माण कार्य के लिए ई निविदा के जरिए कार्य एजेंसी बहाल की गई जाएगी। लोकेशन चयन के बाद रेललाइन बिछाने, स्टेशन, हॉल्ट, पुल, फाटक निर्माण सहित अन्य जरूरी काम किए जाएंगे। इस काम में रेलवे को 2 करोड़ 30 लाख 53 हजार 924 रुपए 48 पैसे की लागत आएगी। नई लाइन बन जाने के बाद लहेरियासराय से सहरसा की दूरी समस्तीपुर की तुलना में 69 किमी से झंझारपुर की तुलना में 46 किमी कम हो जाएगी।

रक्तदान के प्रति मारवाड़ी समाज की महिलाएं आईं आगे

पुपरी : समाजसेवा के नए आयाम गढ़ते हुए महादान रक्तदान के प्रति भी मारवाड़ी समाज की महिलाओं ने ठोस कदम आगे बढ़ाया है। अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की पुपरी शाखा की ओर से रक्तदाता समूह, सीतामढ़ी के सहयोग से पुपरी में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें रक्तवीरों और रक्तवीरांगनाओं से कुल 59 यूनिट रक्त की प्राप्ति हुई। रक्तदान करने वालों में 9 रक्तवीरांगनाएं शामिल रहीं। मुख्य अतिथि ब्रजेश कुमार जालान, सभापति, नगर परिषद-जनकपुररोड एवं विशिष्ट अतिथि-सुमित्रा देवी बागला, रक्तदाता समूह, सीतामढ़ी के संयोजक नीरज गोयनका और रेडक्रॉस सोसाइटी, पुपरी के सचिव अतुल कुमार ने रक्तदान को सबसे बड़ा दान बताते हुए रक्तदानियों की भूमि पुपरी में इस शिविर के आयोजन हेतु मारवाड़ी महिला सम्मेलन, पुपरी के जागरूक सदस्याओं और पदाधिकारियों की सराहना की। आयोजक संस्था की अध्यक्षा मीना विनोद केजरीवाल ने मानवता की सेवा के हित में आयोजित आज के शिविर की सफलता हेतु सभी रक्तदाताओं, रक्तवीरों-रक्तवीरांगनाओं, जिला रक्त केन्द्र सीतामढ़ी की पूरी टीम, रक्तदाता समूह, सीतामढ़ी और रेडक्रॉस सोसाइटी, पुपरी के सहयोग तथा सेवाभाव के लिए हृदय से आभार जताया।

मिथिला डायरी

सियासत... पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने साधा निशाना, कहा-

हेमंत सरकार ने नौजवानों को ठगा

संवाददाता

बोकारो : सूबे में विकास का काम पूरी तरह से ठप है। सरकार की ओर से नौजवानों को ठगने का काम किया गया। सरकार घोषणा करती है कि यह साल नियुक्ति वर्ष होगा, लेकिन कुछ भी नहीं हो रहा है। सरकार नियोजन नीति खुद नहीं बना रही है और दोष केंद्र सरकार पर मढ़ रही है। केन्द्र सरकार की योजनाएं झारखंड के लोगों को दिला पाने में राज्य की हेमंत सरकार पूरी तरह से विफल है। ये बातें राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने बोकारो परिसदन में आयोजित प्रेसवार्ता में कही।

उन्होंने कहा कि आर्थिक अपराध में सीएम और उसके लोग फंसे हुए हैं। दूसरों के कंधे में बंदूक रखकर काम किया जा रहा है। प्रधानमंत्री गरीबों के लिए मुफ्त में अनाज दे रही है, लेकिन राज्य सरकार सही तरीके से उसे लाभुकों तक पहुंचाने में नाकाम साबित हो रही है। कानून व्यवस्था राज्य सरकार का मामला है। प्रजातंत्र में राजनीतिक पार्टी का अधिकार है कि वे गलत काम के खिलाफ आंदोलन करे, इसलिए भाजपा सदैव आंदोलन कर रही है।

एक सवाल के जवाब में मरांडी ने कहा, 'स्थानीय नीति के बारे में सीएम अगर कह रहे हैं कि यह केंद्र का मामला है तो 2013-14 में जब मनमोहन सिंह की सरकार थी, तब उस समय स्थानीय नीति क्यों नहीं बनी? जबकि उस समय हेमंत सोरेन ही मुख्यमंत्री थे।' स्थानीय नीति पर कहा कि जब सरकार ने सदन में स्थानीय नीति का बिल लाया तो हमलोग तो चुपचाप थे, हमलोगों ने तो विरोध नहीं किया। अगर हमें बोलने का मौका मिलता तो उसमें जरूर कुछ सलाह देते, लेकिन विपक्ष को बोलने तक का मौका नहीं दिया गया।

संन्यास पर गृहस्थ की जीत का उत्सव है महाशिवरात्रि : गुरुदेव श्री नंद किशोर

— महाकाल की नगरी में निखिल-शिष्यों का समागम —

विशेष संवाददाता

उज्जैन : महाकाल की नगरी उज्जैन और महाशिवरात्रि के पावन दिवस पर निखिल शिष्यों का समागम...। 'निखिल मंत्र विज्ञान' व 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' के सौजन्य से उज्जैन के हरसिद्धि मंदिर के निकट स्थित नृसिंह घाट पर आयोजित महाकाल महाशिवरात्रि महोत्सव, जहां हजारों की संख्या में निखिल शिष्यों की उपस्थिति और भक्तिमय संगीत के बीच पूज्य गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली जी के अमृत वचन..., हर तरफ आनंद ही आनंद की अनुभूति हो रही थी। इस पावन अवसर पर गुरुदेव श्री श्रीमाली ने अपने शिष्यों के बीच प्रवचनों की अमृतवर्षा करते हुए शिव-शक्ति के मिलन और उनके संयोग व कृपा से मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में विस्तृत चर्चा की।

गुरुदेव ने कहा- उज्जैन की भूमि महान है, जहां कण-कण में महाकाल ही महाकाल हैं। यह धरा कितनी महान है, जहां हजारों-हजारों वर्षों से गृहस्थ, साधु, संन्यासी सब महाकाल का अभिषेक करने के लिए आते हैं और महाकाल का वरदान प्राप्त कर प्रसन्न होते हैं। जहां शिव का नाम निरंतर और निरंतर उच्चरित होता है, वह भूमि अपने आप में दिव्य है और इस दिव्य भूमि पर, महाकाल के प्रांगण में ही हम बैठे हैं तो आनंद ही आनंद है। इसीलिए शिव प्रार्थना में हम कहते हैं कि-

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्
निजं निगुर्णं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्

हे शिव! आप मोक्ष रूप हैं, आप व्यापक ब्रह्म हैं, आप वेदस्वरूप हैं, ईशान दिशा के ईश्वहर और सबके स्वामी हैं। हे महादेव! मैं आपको नमन करता हूं। निज स्वरूप में स्थित, भेद रहित, इच्छा रहित, चेतन, आकाश रूप एवं आकाश को ही वस्त्ररूप में धारण करने वाले दिगंबर शिवजी! मैं हृदय से आपको नमस्कार करता हूं। हे शिव! आप ही मोह को हरने वाले और मन को मंथने वाले हैं, आप मुझ पर प्रसन्न हों।

विचार और क्रिया, दोनों आवश्यक

तो आज शिवरात्रि है। दोनों काम करते हैं। मोह को कम करना है। पूरी तरह से मोह को तो आप मिटा नहीं सकते। इतनी तो आपमें शक्ति है नहीं। विचार करते रहें और क्रिया ही नहीं करें, या केवल क्रिया ही करते रहें और विचार ही नहीं करें, ऐसा उचित नहीं। मनुष्य जीवन में विचार भी आवश्यक है और क्रिया भी आवश्यक है। दोनों का संयुक्तीकरण है शक्ति। न तो केवल विचार से फल मिलता है और ना केवल क्रिया करने से फल मिलता है। दोनों का जहां संयोग होता है, सायुज्य होता है तो फल अवश्य मिलता है।

संसार में हम अपने विचारों से नियंत्रित हो रहे हैं, क्योंकि मन में हजारों-हजार विचार निरंतर और निरंतर चलते रहते हैं और इन विचारों में परिवर्तन कैसे लाया जाए, जिससे जीवन बदल जाएगा? सोच बदलना बहुत मुश्किल हो गया है, क्योंकि आपने अपने जीवन के 50 साल में आपके विचारों ने आपको कंट्रोल कर दिया तो विचारों के भंवर जाल से कैसे निकलें? पहले तो थोड़ा खाली करेंगे, विचार शून्य तो हो नहीं सकेंगे, लेकिन जो आलतू-फालतू विचार हैं, उन्हें दिमाग से निकाल कर कह देंगे कि यह मेरे काम के नहीं हैं।

शिव-शक्ति ही जीवन के आधार

हमारे जीवन में हजारों देवी-देवता हैं, लेकिन उनके आधार हैं शिव और शक्ति। शिवरात्रि में शिव सूत्र प्रदान करते हैं कि हम अपने विचारों को बदलकर जीवन को कैसे परिवर्तित करें।

शिव सूत्र क्या है? शिवरात्रि है। शिव सूत्र को अपनाना है। शिवरात्रि क्यों मनाते हैं? क्योंकि इस दिन शिवजी का विवाह हुआ तो इसका सीधा अर्थ है, शिव सूत्र क्या कहता है कि सन्यास जीवन पर गृहस्थ जीवन की जीत हुई थी, उस जीत के दिवस को हम मना रहे हैं महाशिवरात्रि। अब सन्यासी बड़ा या गृहस्थ बड़ा? गृहस्थ बड़ा, क्योंकि शिव ने ही आज के दिन का चयन किया कि मैं संन्यासी जीवन छोड़कर नया जीवन अपना रहा हूं आज से।

गृहस्थ जीवन ही सर्वोत्तम

इसलिए, संसार में गृहस्थ जीवन ही सर्वोत्तम है। लेकिन, गृहस्थ में जब भी आपको बाधाएं उद्वेलित करने लगे, आपके मन में विचार आया कि मैं तो संन्यासी हो जाता, तो फिर आप शिवरात्रि को याद कर लेना कि जो आदियोगी शिव हैं, उन्होंने संन्यास को छोड़कर गृहस्थ जीवन को अपना लिया और उन्होंने अपनी शक्ति को चुना। निष्काम सन्यासी शिव भी अनुरागी बन जाते हैं। इसलिए संसार के सारे गृहस्थ इस दिवस को धूमधाम से मनाते हैं। संन्यास में अकेला है और गृहस्थ में मेला है। आपने देखा नहीं, कोरोना के दो साल में अकेले रह-रह कर घर की दीवारों को जेल समझने लगे, आनंद नहीं था। पर आनंद के साथ एक और बात है। जब चार लोग मिलेंगे तो कुछ शिकायतें होंगी, क्योंकि सबके अलग-अलग विचार होंगे। अब शिव की बारात निकली तो उसमें भूत, पिशाच, देवता, दानव, गंधर्व, यक्ष सभी शामिल थे, तो पार्वती की मां मैना बेहोश हो गईं। कहने लगीं मैं तो अपनी बेटी की शादी कर रही हूं और ऐसी बारात तो देखी ही नहीं। लेकिन, गृहस्थ का जीवन हो, आनंद हो और समस्याएं नहीं आएं, ऐसा हो ही नहीं सकता।

मजबूत बनाती है बाधाएं

कोई भी शुभ काम हम करेंगे तो थोड़ी-बहुत बाधाएं अवश्य आएंगी। जीवन में जब समस्याएं आएं तो आप समझो कि वह आपको मजबूत बनाने आई है। मजबूत बनाने के लिए ही राम के जीवन में, कृष्ण के जीवन में, निखिल के जीवन में, विवेकानंद के जीवन में, रामकृष्ण परमहंस के जीवन में, मीरा के जीवन में, राधा के जीवन में समस्याएं आईं। ऐसा कोई हुआ ही नहीं, जिसके जीवन में बाधाएं न आई हों।

होली, दिवाली, नवरात्रि सब का यही उद्देश्य है कि हमारे जीवन में रस हो। उमंग के लिए, रास के लिए संयोग चाहिए। संयोग के लिए आप और में मिलते हैं। यह उमंग का उत्सव है, क्योंकि आनंद प्रेम में है। शिवरत्रि आपको इस बात का विश्वास दिलाती है।

जहां शिव हैं, वहां पूर्णत्व है

यह कालचक्र है। जो समय बीत गया, उस पर अधिकार है शिव का। पार्वती ने घोर तपस्या की शिव को पाने के लिए। शिव मिल गए। फिर ऐसा गृहस्थ संसार बसा कि बैल और शेर, सर्प और मयूर एक-दूसरे के दुश्मन होते हुए भी बिना किसी बैर के एकसाथ रहे। जगदंबा ही हैं वह शक्ति, जो ऐसा ऐश्वर्य संभाल सकती हैं। वे हैं आद्या शक्ति महाकाली, आद्याशक्ति पार्वती। आप शिवरात्रि मनाने आये हो, शिव और पार्वती का संयोग मनाने आये हो। केवल हर-हर महादेव से काम नहीं चलेगा, जगदंबे मात की जय बोलनी पड़ेगी, अन्नपूर्णा की भी जय बोलनी पड़ेगी, क्योंकि वह धन वर्षिनी हैं। अधिक इच्छाएं और अधिक कामनाएं बढ़ती जाएंगी दूसरों को दिखाने के लिए बढ़ती जाएं, यह सुखद नहीं है। हम शिव के अनुगामी हैं। इच्छाओं के कारण ही हमारा मन भागता है। अधूरी इच्छाएं भूत-प्रेत के रूप में शिव की बारात में चल रही हैं, क्योंकि शिव शक्ति से मिलन के लिए जा रहे हैं। आपके मन में स्थित शिव और शक्ति का मिलन, शक्ति के साथ जब तक सायुज्य नहीं होगा, कामनाएं पूर्ण नहीं होंगी। पार्वती ने इच्छाओं से ऊपर अपनी गृहस्थी को बसाया। हमारी अधूरी इच्छाओं, कामनाओं को पूर्णता मिले, यही शिव और शक्ति का संयोग है। जीवन संन्यास नहीं है, क्रीडा क्षेत्र है। जहां क्रीड़ा क्षेत्र है, वहां क्रिया निरंतर चलती रहती है। खेल के मैदान में विश्राम नहीं होता। आपको अपने जीवन में रस भाव को जागृत करना पड़ेगा, क्योंकि जहां रस है, वहां शिव हैं और जहां शिव हैं, वहां पूर्णत्व है।

जी-20 ऊर्जा कार्यसमूह: मुख्य बातें

आलोक कुमार
सचिव
विद्युत मंत्रालय
(भारत सरकार)

बेंगलुरु में ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाने से जुड़ी कार्यसमूह की पहली बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई। 18 सदस्य देशों, 9 विशेष आमंत्रित देशों और 15 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के 110 से अधिक प्रतिनिधियों ने इस पहली बैठक में भाग लिया।

अध्यक्ष के रूप में भारत ने ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाने से जुड़ी अपनी उपलब्धियों और भारत सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों, जैसे सौभाग्य, उज्ज्वला और उजाला योजनाओं के माध्यम से देशवासियों को स्वच्छ ऊर्जा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करने संबंधी अपनी सफलता पर प्रकाश डाला। लाइफ अभियान (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) के माध्यम से मांग और जिम्मेदारीपूर्ण खपत को बढ़ावा देने के भारत के आह्वान को सभी भाग लेने वाले देशों का पूर्ण समर्थन मिला।

अध्यक्ष के रूप में भारत द्वारा प्रस्तावित छह प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को सदस्य देशों से भी काफी समर्थन मिला, जिनमें शामिल हैं- (1) तकनीकी कमियों को दूर करके ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाना (2) ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाने के लिए कम लागत वाला वित्तपोषण (3) ऊर्जा सुरक्षा और विविध आपूर्ति श्रृंखलाएं (4) ऊर्जा दक्षता, औद्योगिक कम कार्बन के लिए बदलाव और जिम्मेदारीपूर्ण खपत, (5) भविष्य के ईंधनः हरित हाइड्रोजन और जैव-ईंधन तथा (6) स्वच्छ ऊर्जा तक सार्वभौमिक पहुंच और ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाने से जुड़ा न्यायपूर्ण, किफायती और समावेशी मार्ग।

दक्षता को बढ़ाना और इलेक्ट्रोलाइजर, फ्यूल सेल, कार्बन अवशोषण उपयोग और भंडारण (सीसीयूएस) की लागत को कम करना, बैटरी भंडारण के लिए उन्नत रसायन सेल और छोटे मॉड्यूलेटर परमाणु रिएक्ट आदि की भी अंतरराष्ट्रीय सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों के रूप में पहचान की गयी।

वैश्विक स्तर पर ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाने से जुड़े ऊर्जा सुरक्षा के महत्व पर विचार-विमर्श हुआ। यह स्वीकार किया गया कि ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाने के क्रम में प्रत्येक देश का अपने यहां उपलब्ध ऊर्जा के स्त्रोतों पर आधारित ऊर्जा के क्षेत्र में बदलाव को अपनाने का अपना एक मार्ग होगा।

भविष्य में नेट-जीरो के लक्ष्य को हासिल करने के लिए, 2021 के 29 प्रतिशत की तुलना में 2050 में दुनिया की 90 प्रतिशत बिजली नवीकरणीय स्त्रोतों से आनी चाहिए। वैश्विक सौर और पवन क्षमताओं को गुणात्मक रूप से बढ़ाने की आवश्यकता है। अनुमान है कि 2020 और 2050 के बीच केवल सौर क्षमता ही 17 गुनी बढ़ेगी। 2050 तक, विश्व स्तर पर बिजली क्षेत्र में वार्षिक बैटरी उपयोग को 300जीडब्ल्यू से अधिक बढ़ना होगा, यानी, 2021 में बैटरी आवश्यकता से 51 गुना अधिक। इसी तरह, हरित हाइड्रोजन के लिए भी गुणात्मक वृद्धि का अनुमान लगाया गया है, जहां 2030 तक इलेक्ट्रोलाइजर क्षमता (~ 850 जीडब्ल्यू) की 129 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि दर की आवश्यकता है। एक प्रमुख चुनौती के रूप में आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने की तत्काल आवश्यकता की पहचान की गयी, क्योंकि दुनिया नवीकरणीय उर्जा क्षमताओं के निर्माण में वृद्धि कर रही है। एक विश्लेषण से पता चलता है कि वर्ष 2022 में, प्रमुख प्रौद्योगिकियों- सौर पीवी मॉड्यूल (~ 480 जीडब्ल्यू), पवन (~120 जीडब्ल्यू), लिथियम-आयन बैटरी (1000 जीडब्ल्यूएच), और 50% से अधिक इलेक्ट्रोलाइजर (8 जीडब्ल्यू प्रतिवर्ष)- की 80 प्रतिशत से अधिक विनिर्माण क्षमता केवल तीन देशों में केंद्रित हैं। उदाहरण के लिए, पिछले दशक में, सौर पीवी सामग्री के वैश्विक व्यापार का 70 प्रतिशत हिस्सा, केवल पांच देशों से है, जबकि पवन ऊर्जा के क्षेत्र के कुल व्यापार का 80 प्रतिशत हिस्सा केवल चार निर्यातक देशों के पास है। लिथियम-आयन बैटरी (एलआईबी) का निर्माण भी कुछ देशों में ही केंद्रित है। कुल व्यापार में 70 प्रतिशत हिस्सेदारी, केवल चार देशों की है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वर्तमान में आरई विनिर्माण अत्यधिक केन्द्रित है और व्यापार प्रवाह, ऊर्जा सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा करता है, सदस्य देशों ने स्थानीय विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हुए

निर्माण क्षमता को बढ़ाने और नई ऊर्जा प्रणाली की प्रमुख सामग्रियों, महत्वपूर्ण खनिजों और कल-पुर्जों के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं के विविधीकरण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

हरित हाइड्रोजन/अमोनिया को बढ़ावा देने को अत्यधिक समर्थन मिला। कुछ सदस्यों ने, इसके अलावा, कम-कार्बन हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों की पूरी श्रृंखला पर विचार करने का प्रस्ताव दिया।

वित्तपोषण की लागत को कम करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के वित्त के साथ-साथ निजी क्षेत्र द्वारा वित्तपोषण की आवश्यकता पर सुझाव दिए गए। आमंत्रित देशों ने वैश्विक दक्षिण के देशों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखने पर विचार साझा किए। उन्होंने इन प्रौद्योगिकियों में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारों को स्पष्ट दीर्घकालिक रूपरेखा देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

सदस्य देशों ने कम-कार्बन वाली अर्थव्यवस्थाओं के लिए ऊर्जा दक्षता को "फर्स्ट फ्यूल" के रूप में मान्यता दी और उनके द्वारा लागू की गयी विभिन्न राष्ट्रीय नीतियों पर प्रकाश डाला। ये 2030 तक ऊर्जा दक्षता में सुधार की वैश्विक दर को दोगुना करने के बारे में रोडमैप के अपेक्षित परिणाम के लिए क्रमिक आवश्यकताओं पर अच्छी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। हरित विकास और हरित रोजगार को बढ़ावा देने के साधन के रूप में उद्योग और परिवहन के विद्युतीकरण के महत्व पर जोर दिया गया।

आईईए की रिपोर्ट के अनुसार, कोविड संकट के दौरान दुनिया में 75 मिलियन लोग सामर्थ्य में कमी के कारण बिजली की सुविधा से वंचित हो गए। विश्व स्तर पर लगभग 2.4 बिलियन लोग स्वच्छ खाना पकाने की प्रौद्योगिकियों और स्वच्छ ईंधन की सुविधा से वंचित हैं, संभावना है कि अतिरिक्त 100 मिलियन लोग भी, जिनकी स्वच्छ ईंधन तक पहुंच है, इस सुविधा से वंचित हो जायेंगे। सदस्य देशों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि ऊर्जा के हरित स्रोतों को अपनाने के लिए सभी एसडीजी में न्यूनतम व्यापार-बदलाव सुनिश्चित किया जाना चाहिए, ताकि कोई पीछे न रह जाए।

कुछ सदस्य देशों ने ऊर्जा सुरक्षा के लक्ष्य को हासिल करने के लिए; बदलाव के दौर में प्राकृतिक गैस की जीवाश्म ईंधन के रूप में पहचान किए जाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। समूह ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाने के दौर में; इथेनॉल, संपीडित बायोगैस, हरित हाइड्रोजन जैसी ईंधन की एक विस्तृत श्रृंखला भविष्य के ईंधन के रूप में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल रातों में भी जागे
देखे कौन किधर को भागे
भूख मिटाने, प्राण बचाने
कोटि कीटदल गाते गाने
उथल-पुथल बढ़ता जंगल में
चीखें हिय में करतीं भय
संचार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

चल जंगल चल, चल जंगल
जंगल में एक गुफा बड़ी है
झुरमुट में ज्यों छिपी खड़ी है
गुफा वनों के राजा का घर
करे बाघ विश्राम यहां पर
लाकर रखता इत्मिनान से
भोजन अपना ताजा यहीं,
शिकार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

वीवो ने उतारा नाइट विजन कैमरा वाला नया स्मार्टफोन

बाजार में नया

वीवो ने अपने नए 5जी स्मार्टफोन वाई56 को भारत में लॉन्च कर दिया है। फोन में सुपर नाइट कैमरा सेंसर दिया गया है, जिससे अंधेरे में दिन जैसी क्लियर फोटो और वीडियो लिए जा सकेंगे। इसमें मीडियाटेक डायमेंसिटी 700 एसओसी दिया गया है। यह स्मार्टफोन 8जीबी के रैम और 128 जीबी की स्टोरेज के साथ सिंगल वैरिएंट में अवेलेबल है। इसका मूल्य 19,999 रुपए रखा गया है। इसकी बिक्री 15 फरवरी को ऑफलाइन शुरू की गई थी। इसे वीवो की ऑफिशियल वेबसाइट से भी खरीदा जा सकता है। इसमें ब्लैक इंजन और ऑरेंज शिमर कलर ऑप्शन मिलते हैं।

पेज- एक का शेष

ये बैसाखी है खास...

बाजार जाने पर फल-सब्जी की खरीदारी के लिए उसमें जालीदार पॉकेट और मोबाइल व अन्य आवश्यक कागजात आदि को सुरक्षित रखने के लिए वाटरप्रूफ पॉकेट की भी व्यवस्था है। झटके से बचाने के लिए शॉक एब्जार्बर भी है। उसने कहा कि अगर मेडिकल सेक्टर से उसे सहायता मिले, तो वह अस्पतालों व अन्य चिकित्सीय स्थानों से जरूरतमंदों के लिए अपने प्रोजेक्ट को लाभप्रद बना सकती है।

अपने पिता की परेशानी देख सूझा आइडिया

अंजलि ने बताया कि वह जब पांचवीं कक्षा में थी, उस समय उसके पिता के घुटने के लिगामेंट का ऑपरेशन हुआ था। उन दिनों वह बैसाखी के सहारे चलते थे। बाजार से दूध वगैरह लेकर आने में दिक्कत होती थी। खासकर अंधेरे में चलने में काफी परेशानी होती थी। एक बार वह गिरकर चोटिल हो गए थे। उस समय से ही उसके मन में विशेष बैसाखी बनाने का विचार चल रहा था, जिसे उसने अब साकार कर दिखाया है। इस काम में स्कूल के गाइड टीचर मो. ओबैदुल्लाह अंसारी ने उसकी विशेष मदद की। इसे तैयार करने में उसे लगभग तीन हजार रुपए की लागत आई है। बोकारो स्टील प्लांट के अधिकारी अनंत कुमार गौरव और शिक्षिका राखी गौरव की होनहार सुपुत्री अंजलि की दिली ख्वाहिश आगे चलकर आईटी में इंजीनियरिंग के बाद एक आईएएस अधिकारी बनने की है। उसे रोबोटिक्स में काम करने का अनुभव रहा है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

आतंक के खतरे से डरा पाकिस्तान

पहले आतंकियों को पाला, अब दुनिया के सामने गिड़गिड़ा रहा

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : आतंक की फैक्ट्री चलाने वाला पाकिस्तान आज खुद आतंक का शिकार बन गया है। जो पाकिस्तान अपने बम-बारूद से मदद देकर भारत में आतंकवादियों से कोहराम मचवाता रहा है, आज वही आतंकवाद पाकिस्तान को निगल रहा है। पिछले एक दशक से पाकिस्तान अपने ही तैयार किये गये आतंकियों और आतंकवादी संगठनों से जूझ रहा है।

पाकिस्तान के कराची में शुक्रवार को पुलिस प्रमुख के कार्यालय पर हथियारों से लैस पाकिस्तानी तालिबान आतंकवादियों ने हमला कर दिया। इस घटना में तीन हमलावर मारे गये। जबकि, तीन सुरक्षाकर्मियों समेत चार अन्य लोगों ने अपनी जान गंवा दी। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) ने इस आतंकी हमले की जिम्मेदारी ली है। इस हमले के बाद अब पाकिस्तान अफगान तालिबान पर निशाना साध रहा है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी ने कहा है कि अगर अफगानिस्तान की अंतरिम सरकार ने अपनी जमीन पर चलने वाले आतंकी समूहों से निपटने की इच्छाशक्ति नहीं जतायी तो आतंकवाद को पाकिस्तान के बाहर पूरी दुनिया में फैलने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

दरअसल, पाकिस्तान की ओर से ऐसा बयान हैरान करने वाला है। ऐसा इसलिए, क्योंकि पाकिस्तानी सरकार हमेशा तालिबान में अंतर करती रही है। पाकिस्तान की सरकार अफगानिस्तान में मौजूद तालिबान को 'गुड तालिबान' और टीटीपी को 'बैड तालिबान' कहती रही है। जर्मनी में म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन को संबोधित करते हुए बिलावल ने कहा कि रीजन में अफगानिस्तान से निकलने वाला आतंकवाद एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। उन्होंने इस बात पर अफसोस जताया कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय या तालिबानी सरकार इस मुद्दे पर गंभीरता नहीं दिखा रही।

बोया पेड़ बबूल का आम कहां से होय?

दरअसल, पाकिस्तान एकमात्र ऐसा देश है, जिसकी बुनियाद ही नफरत पर पड़ी है। उसने आजादी के बाद से ही भारत के खिलाफ अघोषित युद्ध छेड़ रखा है और वह भी आतंकवादियों की मदद से। क्योंकि, खुले तौर पर उसने जब भी भारत के खिलाफ लड़ाई की, उसे मुंहकी खानी पड़ी है। पाकिस्तान ने ओसामा बिन लादेन से लेकर हाफिज सईद, दाऊद इब्राहिम सहित अनेकानेक आतंकवादियों को पनाह दी है। लेकिन, अब उसी पर आतंक के जख्म भारी पड़ रहे हैं। अफगानिस्तान में भी तालिबान की सरकार बनाने में पाकिस्तान ने खुलकर तालिबान का साथ दिया। आज वही तालिबान उसकी चूलें हिला रहा है। पाकिस्तानी सरकार से लेकर वहां की सेना तक ने आतंकियों को कुछ भी करने की खुली छूट दी, भारत के खिलाफ लड़ने के लिए उन्हें तैयार किया जाता रहा, उनकी सुविधा के लिए सरकार ने अपना खजाना खोल दिया। लेकिन, जिस पाकिस्तान ने तालिबान को खड़ा किया, आज वही उसके लिए बड़ा खतरा बन गया है, पाकिस्तान को दहला रहा है। इससे पहले पेशावर में हुए आतंकी हमले में सौ से अधिक लोगों को मौत की नींद सुलाकर टीटीपी ने पाकिस्तान को गहरे घाव दिये हैं।

बिलावल भुट्टो ने जतायी चिन्ता, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से मांगी मदद

बिलावल भुट्टो ने कहा कि 'यह चिंता का विषय है। अगर हम या अफगानिस्तान की अंतरिम सरकार इन आतंकी समूहों को गंभीरता से नहीं लेते हैं या फिर आतंकी समूहों पर कार्रवाई करने की इच्छा और क्षमता नहीं दिखाते तो आतंकवादी गतिविधियों में बढ़ोतरी दिखेगी। अफगानिस्तान में तालिबान राज आने के बाद से ही हम इसमें बढ़ोतरी देख रहे हैं।' उन्होंने आगे कहा, 'पाकिस्तान की आतंकी गतिविधियां बढ़ रही हैं और इसे पाकिस्तान से बाहर निकलकर दूसरे देशों में पहुंचने में देर नहीं लगेगी।' बिलावल भुट्टो ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से ऐसे मामलों पर तुरंत कार्रवाई की फरियाद की है। बिलावल भुट्टो ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ऐसे मामलों पर तुरंत कार्रवाई करे। दरअसल, जब अमेरिका अफगानिस्तान से बाहर निकलने वाला था तो उसने अफगानिस्तान के सामने एक शर्त रखी थी। इसके मुताबिक वह आतंकियों को अपनी जमीन को दूसरे देशों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करने देगा। जबकि, सरकार बनाने के क्रम में तालिबान ने वहां की जनता पर जो जुल्म ढ़ाये, वे बेहद खौफनाक थे। इधर, हाल के दिनों में देखा गया है कि टीटीपी अफगानिस्तान सीमा के करीब पूरी तरह सक्रिय है। पाकिस्तान कई बार आरोप लगा चुका है कि अफगानिस्तान टीटीपी की मदद कर रहा है। लेकिन, अफगान तालिबान ने इसे सिरे से नकार दिया है।

साल दर साल आतंक के गहरे जख्म

जिस आतंक को पाकिस्तान ने पाला-पोसा, वही उसे साल दर साल आतंक के गहरे जख्म देते रहे हैं। आइए, हम इन आतंकी हमलों की फेहरिस्त को देखते हैं:-

-पाकिस्तान में **वर्ष 2014** में 1563 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 1471 नागरिकों और 508 सुरक्षाबलों की मौत हुई। जबकि 3268 आतंकी मारे गए।

- **वर्ष 2015** में 950 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 866 नागरिकों और 339 सुरक्षाबलों की मौत हुई। तो वहीं, 2407 आतंकी ढ़ेर हुए।

- **वर्ष 2016** में 526 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 541 नागरिकों और 291 सुरक्षाबलों की मौत हुई। जबकि, 897 आतंकी मारे गए।

- **वर्ष 2017** में 294 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 439 नागरिकों और 216 सुरक्षाबलों की मौत हुई। तो वहीं, 533 आतंकी ढ़ेर हुए।

- **वर्ष 2018** में 164 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 363 नागरिकों और 158 सुरक्षाबलों की मौत हुई। जबकि, 162 आतंकी मारे गए।

- **वर्ष 2019** में 136 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 142 नागरिकों और 137 सुरक्षाबलों की मौत हुई। तो वहीं, 86 आतंकी ढ़ेर हुए।

- **वर्ष 2020** में 193 आतंकी घटनाएं हुईं। इन घटनाओं में 169 नागरिकों और 178 सुरक्षाबलों की मौत हुई, जबकि, 159 आतंकवादी मारे गए।

- **वर्ष 2021** में 267 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 214 नागरिकों और 226 सुरक्षाबलों की मौत हुई। तो वहीं, 223 आतंकी ढ़ेर हुए।

- **वर्ष 2022** में 365 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 229 नागरिकों और 379 सुरक्षाबलों की मौत हुई। जबकि, 363 आतंकी मारे गए।

- **वर्ष 2023** में 34 आतंकी घटनाएं हुईं, जिसमें 70 नागरिकों और 63 सुरक्षाबलों की मौत हुई। तो वहीं, 38 आतंकवादी मारे गए। (ये आंकड़े हालिया घटनाओं से पहले के हैं।)